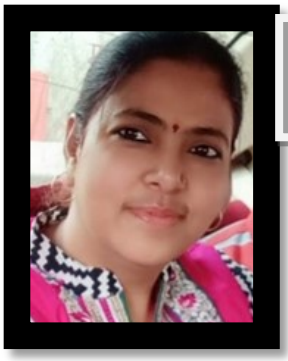

प्रो. कंचन शर्मा

प्रोफेसर, हिंदी विभाग,मणिपुर विश्वविद्यालय,काँचीपुर, इंफाल

एवं आईसीसीआर हिंदी पीठ, भारत विद्या विभाग, सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया।

मुझे फैल जाने दो

मुझे फैल जाने दो
अपनी विशाल देह-यष्टि पर,
मुझे ढंक लेने दो
अपने चौड़े वक्ष को,
मैं-
वोल्गा हूं, गंगा हूं, पद्मा हूं,
या-
कह लो मुझे नील
मगर मुझे सींचने दो
प्यासे सहरा की धरती को
मैं ढंक दूंगी-
रेतीले जिन्दगी के दर्द,
मैं-
जस्मीन हूं, नर्गिस हूं, कचनार हूं
या-
कह लो खुशबू
मुझे महकने दो कांटों की गिरफ्त में
मैं हूं-
हृदय अरण्य की कस्तूरी,
शीतल कर दूंगी जख्मों की टीस
आम्रबेल की तरह,
मैं-
पैरासाइट हूं,शीरीष हूं,बेहया हूं,
या-
कह लो मुझे 'प्रेमलता' जो
तुम्हारी उंगली पकड़कर....,
आकाश नापती रही
पर---
मैं हूं-
जिंदगी की धूरी!